पानी की बानी

आनन्द कुमार 'गौरव'

पानी की बानी
जल बिन जैसे
मीन-चाहना बेमानी है
जीवन तब तक संभव है
जब तक पानी है

गलियों सड़कों चौराहों
मत इसे बहाओ
करो मित्र उपयोग
न घर में व्यर्थ लुटाओ
अगली पीढ़ी के
प्रयोग को सुधि लानी है

वृक्ष मौन आहत हैं
इन्हें उदास मत करो
पर्यावरण सुरक्षा
और निराश मत करो
हमें वनों को वह
हरियाली लौटानी है

रोको आज कटान
हरे जीवित तरुओं का
फल हैं ये पिछली पीढ़ी
रोपें बिरवों का
तपती धरणी पर
छाया फिर बरसानी है

पर्यावरण प्रदूषण से
संताप मिलेंगे
जीवन मधुबन को
नित नये विलाप मिलेंगे
सजग चेतना यह
जन जन को समझानी है

पर्वत, पर्वतवासी
सारे डरे डरे हैं
नई नई सुविधाओं से
उभरे खतरे हैं
क्षति न मूल को इनके
कोई पहुंचानी है

मेरे भारत को
रहने दे भारत सत्ता
यहाँ न चलवाए अपना
लन्दन का पत्ता
संरचना आस्था
न हमको मिटवानी है

लाल बहादुर नदी तैर
विद्यालय आते

डांडी यात्रा गांधी
पैरों के बल जाते
अब अपंग मैट्रो बिन हुई राजधानी है

खनन, खदानों-ब्लास्ट
बने पानी के दुश्मन
स्वार्थ सने हाथों ने
दी जन जन को उलझन
खोखल होती यह ज़मीन
कल धंस जानी है

कहीं मुसाफिर कोई

प्यासा रह जाता है
यहाँ वॉश बेसिन में
कितना बह जाता है
कहना होगा उचित
निरा शोषक प्राणी है

नदियों में गंदगी
बहाने वालों सुन लो अपनी गंगा
दूषित

करने वालों सुन लो
अगले जन्म तुम्हें
केंकड़ काया पानी है

करो आज गंगा तट
चिता जलाना बंधित
और अधजले जिस्मों का
बहना प्रतिबंधित
अब लकीर का मत
फ़कीर हो तू ज्ञानी है

क्षमा करो हमको
आधुनिकी नहीं चाहिए

जल संरक्षण रहित
त्रासदी नहीं चाहिए
प्राकृत भारत रहे
यही कबिरा वानी है

कंकरीट कॉलोनी सजी
जला जंगल है
इस पर सारे मौन
उगी मन में दलदल है
शाश्वत सत्य न जो
पढ़ पाया अज्ञानी है

संपर्क करें:
आनन्द कुमार 'गौरव'
ई-8 ए, हिमगिरि कॉलोनी, कांठ रोड,
मुरादाबाद-244 001
(उत्तर प्रदेश)
मो.नं. 09719447843